International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्राचीन कालिक साहित्य में वर्ण

डॉ0 अजीत उदय
एम.ए., पीएच.डी. (इतिहास)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

रूप और गुण की अभिव्यक्ति वर्ण व्यवस्था का मूल है। हिन्दु शास्त्र के वचनों से प्रमाणित होता है।

समस्त प्रकृति (सांख्य दर्शन के अनुसार स्रष्टा थी) सत्त्व, रज, तम गुणों की साम्यावस्था है। सत्त्व से स्वच्छ, दोष रहित, सांसारिकता से परे, निर्मल स्वभाव दया और स्नेह का बोध होता है, जिस व्यक्ति में ऐसा गुण पाया जाता होगा उसे सत्त्वगुणी प्रधान की संज्ञा दी जाती होगी। 'गुणों में श्रेष्ठ माने जाना वाला'–उक्त गुण यदि किसी व्यक्ति में पाया जाता होगा तो उसे भी श्रेष्ठ माना जाता होगा और उसे ब्राह्मण की संज्ञा दी गयी होगी।

राजस गुण सांसारिकता की ओर प्रेरित करता है। वह भोग में विश्वास करता है। भोग के लिए संघर्ष तथा दूसरे प्राणियों की पराजय से खुशी व प्रसन्न होती है। दो युद्धातुर प्राणी में विजय प्राप्त करनेवाला व्यक्ति को अहंकारी तथा दूसरी प्रतिशोध लेने के लिए आतुर को क्षत्रिय की संज्ञा दी गयी होगी। (दोनों को ही)

राजस् का ही उग्र रूप तमस है। यह दूसरे की पीड़ा से सुखी होता है। वध होता हुआ शिकार (पशु पक्षी) को देखकर आह्लादित होता है। 'वंशी से (एक प्रकार का सूई से भी मोटा व नुकीला अस्त्र जिससे पानी में तैरती हुयी मछली को फंसायी जाती है) फंसती हुयी देखकर शिकारी प्रसन्न होता देखा जा सकता है। तमोगुण अज्ञान और अन्धकार का प्रतीक है, जो ज्ञानेच्छुक लोगों का उपहास भी करता है। उसे वैश्य या शूद्र कहा जाने लगा होगा। आज भी पढ़ने का शौक रखनेवालों को पढ़ाकू, विलास प्रिय को भोगी, अधिक बोलने वालों को वकील, खेती करने वालों को किसान, धनोयार्जक को 'साहु जी' या बनिया, व मछली के शिकारी को (चाहे व किसी भी जाति का हो) सहनी जी कहने की मुहावरा देखी जा सकती है।

डॉ0 उदय कान्त मिश्र ने 'माँ काली की पूजा पद्धति : विश्लेषण' में ऋषि (मन्त्रद्रष्टा) को धर्म जाति या वर्ण से परे माना है। उनकी यह मान्यता धर्मानुष्ठान में, प्रयोग होनेवाला 'विनियोग' के आधार पर है।

समाजशास्त्रियों का ध्यान ज्योतिषशास्त्र के तरफ आकृष्ट किया जा रहा है, जिसमें राशियों व नक्षत्रों को ब्राह्मणादि 'वर्ण' से जोड़ा गया है। नक्षत्रगत गुणों के आधार पर बननेवाला उक्त विचार का कोई सम्बन्ध जाति से नहीं है। यानि किसी ब्राह्मण (जाति से) का जन्म तुला राशि में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हुआ हो उसे 'शूद्र वर्ण' का जातक कहा जायेगा न कि ब्राह्मण। जबकि किसी शूद्र (जाति) का जन्म मीन राशि में हो तो उसे ब्राह्मण कहा जायेगा शूद्र नहीं। मीन राशि के जातिका की (चाहे किसी भी जाति लड़की) शादी तुला राशि के लड़के से हो तो लड़का का मेलापक गुण 'न्यून' माना जायेगा। इसी प्रकार सिंह राशि की लड़की (नक्षत्र गुण क्षत्रिय) का विवाह यदि धनु राशि के (नक्षत्र गुण क्षत्रिय) लड़के के साथ हो तो वह सम माना जायेगा। इससे स्पष्ट होता है कि पूरा काल में ब्राह्मणादि वर्ण गुणबोधक था, न कि जाति या समूहबोधक।

मनु ने भी ब्राह्मणादि वर्ण का निर्णय गुणों के आधार पर भी दिया है। (आगे भी चर्चा होगी)

मनु का समय अज्ञात व अन्धकार से घिरा हुआ है। मनु के प्रति जो हिन्दुओं में आस्था व विश्वास है और तदनुकुल समय निर्धारित है, उसे इतिहास नहीं मान सकता है। अगर हम स्मृति के आधार पर मनु का काल निर्धारित करें–जैसा अल्वेरूनी' ने भी कहा है तो स्मृतिकार मनु का समय २०० ई0 पूर्व से पहले चला जायेगा। रामायण की रचना ४००–१००० ई0 पूर्व मानी जाती है, जहाँ वर्ण की चर्चा है। रामायण का वर्ण लगभग जाति के रूप में निरूपित हैं, तो क्या मनु से भी पहले किसी ने धर्मसूत्र या स्मृति लिखा या बिना निर्णय का ही जाति बोध होता था। अनेक प्रश्न–दर–प्रश्न उभरते हैं जिसका समाधान करना ही होगा। मनु और याज्ञवल्क्य की 'स्मृति' ही हिन्दू समाज में पुरा काल से मान्य रहा है। शेष स्मृतियां केवल ग्रन्थ मात्र है, सम्पूर्ण रूप से मान्य नहीं। ऐसा कहा जा सकता है। समय सापेक्ष उक्त अठारह या सोलह स्मृतियों के वचनों में से कुछ तो आदृत है किन्तु उनके कतिपय स्मार्त नियमों को पूर्णरूप से स्वीकार नहीं किया गया है, जिसमें गौतम स्मृति भी एक है।

कालान्तर में 'स्मृति विधा में' स्मृति के स्थान पर निबन्ध लिखने की परिपाटी चल पड़ी।

उत्तर व उत्तर वैदिक (काल) की सन्धि वेला में मनु की उपस्थिति मानी जानी चाहिए क्योंकि मनूक्त प्रतिपादित नियमों का रामायण एवं महाभारत में पालन किया गया है। भले ही इसकी (मनु की) रचना बाद में मिली हो या लिखी गयी हो। मनु वर्णों को 'कर्मणा–जन्मना' (कर्म से या जन्म से) दोनों पक्षों को स्वीकार किया है, जबकि रामायण और महाभारत और महाभारत 'जन्मना के पक्ष में है' और उसके तहत ही 'जन्मना वर्ण' को कर्मणा रूप में रखने की चाहत रखता हो। अतः उक्त बिन्दु में उपजा हुआ दोनों प्रश्नों का समाधान अपेक्षित है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1. ऋग्वेदिक साहित्य वर्ण को 'कर्मणा' मानता है।
2. ऋग्वेदोत्तर (व रामायण काल ('जन्मना' मानने के पक्ष में आ गया।
3. हर्षोंतर काल में तो 'कर्मणा' की अवधारणा ही विलोपित हो गयी।

उक्त तीनों विषयों का क्रमशः विश्लेषण किया जा रहा है। तत्पश्चात् यह निर्णय लिया जायेगा कि उक्त विभाजन हिन्दू समाज के लिए क्या संदेश देता है। उक्त विषय में यह भी ध्यातव्य है कि वैदिक कर्मों का प्रतिपादन ही वैदिकेत्तर साहित्य का प्रयोजन है। वर्ण व आश्रम धर्म का पालन उक्त परिप्रेक्ष्य में ही होना चाहिए। कोई विचार वेद विरूद्ध नहीं करना 'हिन्दू' का धर्म (कर्त्तव्य) है। मनु ने स्वयं स्मृति में स्पष्ट कहा है कि ऐसा कोई स्मृति का वचन जो वेद विरूद्ध हो, नहीं माना जाना चाहिए। वेद–स्मृति–पुराण या अन्य धर्म साहित्य में वेद प्रथम–स्मृति द्वितीय–तथा पुराण का तीसरा स्थान है। पुराण या धार्मिक साहित्य के अंतर्गत ही रामायण और महाभारत (गीता भी) प्रमाण स्वरूप है। अमर कोश ने तो 'स्मृति' को ही एकमात्र 'धर्मशास्त्र' बताया है। विषय का आरंभ वैदिक साहित्य (ऋग्वेद) से किया जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 (क) भारतीय दर्शन–वलदेव उपाध्याय, पृ0 260
(ख) सांख्य कारिका–कपिल श्लोक 15–16
(ग) सत्त्व–रज तमसां साम्यावस्था प्रकृति (सांख्य सूत्र–कपिल)
2 (क) सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः।
निबधन्ति महाबाहो देहे देहनभव्यम्।। (गीता 14/05)
(ख) तत्र सत्त्वं निर्मल त्वात्प्रकाश कमानगतम्।
सुख संगेन वध्नाति ज्ञानसंगेन चानघ।। (गीता 14/06)
3 (क) रजौ रागात्मकं विद्धि तृष्णासंग–समुद्भवम्।
तंन्निबध्नाति–कौन्तेय–कर्मसंगेन देहिनम्। (गीता 14/07)
4 (क) तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्।
प्रमाद–आलस्य–निद्रा–भिस्तन्निबध्नाति भारत।। (गीता 14/08)
(ख) सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत।। (गीता 14/09)
5. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुय–पृ0 893 द्रष्टव्य
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास–डॉ0 वाचस्पति गैरोला, पृ0 द्रष्टव्य।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A